• बकरीद...

परम्परा और रीति-रिवाज...

इस्लामिक चंद्र कैलेंडर में बकरीद या ईद-उल-अजहा, दूसरा सबसे प्रमुख त्योहार होता है। इस्लाम धर्म में रमजान के महीने में आखिर के दिन में ईद-उल-फितुर सबसे प्रमुख त्योहार होता है। दूसरे प्रमुख त्यौहार बकरीद को बलिदान की भावना से मनाया जाता है। इसी दिन, हाजी यात्रियों की यात्रा का अंत भी हो जाता है। इस पर्व की शुरूआत का इतिहास लगभग 4000 साल पुराना है जो कि पैगम्बर इब्राहिम से जुड़ा हुआ है जो सऊदी अरब के मक्का नामक स्थान पर निवास करते थे।

कहते हैं कि अल्लाह ने उनकी वफादारी की परीक्षा लेने के लिए उनसे उनके इकलौते पुत्र की बलि मांगी। वह देने को राजी हो गए और जैसे ही वह उसे मारने के लिये आगे बढ़े, अल्लाह ने उन्हे रोक दिया। उनकी वफादारी से अल्लाह खुश हो गए और उन्होंने उसे पुत्र के बदले बकरे की बलि चढ़ाने को कहा। तब से आज तक, बकरीद के दिन, बकरे को हलाल किया जाता है।

बकरीद एक अलग प्रकार का त्योहार है जिसमें मजा और धर्मशीलता दोनों मौजूद होते हैं। बकरीद के दिन परिवार के हर सदस्य को नए कपड़े पहनना अनिवार्य होता है। मुस्लिम परिवारों के लोग पहले से ही नए कपड़े बनवाने लगते हैं। मुस्लिम समुदाय में कपड़ों का दान भी होता है ताकि

उनके पर्व पर कोई भी बिना नए कपड़ों के न रहें।

मुस्लिम महिलाएं, बकरीद के दिन अपने हाथों पर मेंहदी लगाती हैं और हंसी-खुशी से समय बिताती हैं। वे कई प्रकार की खरीददारी भी करती हैं और बकरीद के दिन अच्छे से सजती हैं।

बकरीद के दिन सुबह-सुबह, घर के सभी लोग मस्जिद जाते हैं और नमाज अदा करते हैं। आवश्यक सभी रिवाजों को वहां पूरा किया जाता है। महिलाएं, घर पर रहकर प्रार्थना करती हैं।

जैसा कि ऊपर वर्णित है कि लोग इस दिन चार पैर वाले किसी जीव की बलि देते हैं, तो वे बकरे, ऊंट या गाय की बलि देते हैं। इन पर भारी खर्च किया जाता है। जिस जीव की बलि देनी होती है, उसके लिए निर्धारित नियम होते हैं, हर जीव को नहीं चढ़ाया जाता है। बलि देने के बाद, निकलने वाले मीट को तीन हिस्सों में बांटा जाता है। पहला हिस्सा परिवार के लिए, दूसरा हिस्सा दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए और तीसरा हिस्सा, गरीबों और जरूरतमंदों को दिया जाता है। इस तरह पर्व के दौरान सभी का ख्याल रखा जाता है।

• परंपरा...

सही आसन पर पूजा

ईश्वर की पूजा, हवन, मंत्र जाप आदि करते समय हमेशा आसन बिछाकर ही बैठने की परंपरा रही है। किसी भी कामना के लिए किये वाले पूजन कार्य के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला आसन बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदू धर्म में विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं से आशीर्वाद पाने के लिए अलग-अलग आसन पर बैठकर पूजा करने को विधान है। आइए जानते हैं कि आखिर किस पूजा में किस आसन को बिछाकर बैठने पर शुभ फलों की प्राप्ति होती है-

▸▸ किसी भी आसन पर बैठकर पूजा करने से पहले हमें उसके लिए भूमि पर ध्यान देना चाहिए. हमेशा हमें शुद्ध एवं पवित्र भूमि पर आसन बिछाकर ईश्वर की साधना करनी चाहिए।

▸▸ किसी भी साधक को ढीले वस्त्र पहनकर साधना नहीं करनी चाहिए। इसे एक प्रकार का दोष माना गया है, जिससे जातक के जीवन में दरिद्रता आती है। इसी तरह जमीन पर बैठकर, पत्थर, ऊबड़- खाबड़ स्थान पर बैठकर भी पूजा नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने पर तमाम तरह के रोग होते हैं। लकड़ी के आसन पर बैठकर पूजा करने को पूरी तरह से मनाही है, क्योंकि ऐसी साधना पूरी तरह से (निष्फल) होती है।

▸▸ प्राचीन काल में ऋषि-मुनि मृगचर्म पर बैठकर ही अपनी जप-तप, साधना, अनुष्ठान आदि किया करते थे क्योंकि यह आसन पुण्य एवं मोक्ष प्रदान करने वाला होता है। इस आसन पर बैठकर की जाने वाली साधना शीघ्र ही सफल होती है।

▸▸ मृगचर्म की तरह व्याघ्रचर्म आसन आसन का प्रयोग भी प्राचीन काल में हुआ करता था। व्याघ्रचर्म आसन को तेज, बल और साहस में वृद्धि के लिए अत्यंत शुभ माना गया है।

▸▸ किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए कंबल का आसान अत्यंत शुभ माना गया है। पवित्र माना जाने वाले कंबल पर बैठकर साधना करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

▸▸ रेशम कपड़े से बना आसन सभी प्रकार की पूजा के शुभ फल को दिलाने वाला होता है। सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने के लिए यह आसन भी उत्तम माना गया है।

▸▸ ईश्वर की साधना-आराधना के लिए कुश के आसान का बहुत ज्यादा महत्व है। अत्यंत पवित्र माने जाने वाले इस आसन पर बैठकर साधना करने पर अनंत फल की प्राप्ति होती है।

▸▸ ईश्वर की पूजा के लिए कभी भी दूसरे का आसन प्रयोग में नहीं लाया जाना चाहिए। पूजा के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले आसन के रंगो का भी महत्व है। शुभ फलों की प्राप्ति के लिए देवी-देवता, वार या कामना विशेष की पूजा-साधना आदि करते समय उनसे संबंधित शुभ रंग के आसन का ही प्रयोग करें. जैसे सुख शांति, ज्ञान प्राप्ति, विद्या प्राप्ति और ध्यान साधना के लिए पीला आसन श्रेष्ठ माना गया है।

कुर्बानी का यह पर्व...

जामा मस्जिद के नायब शाही सयैद शाबान बुखारी ने कहा कि, ईद-उल-अजहा का त्योहार 21 जुलाई को मनाया जाएगा। वहीं रविवार को इस्लामी माह जिलहिज्जा का चांद कई जगहों पर देखा गया, हालांकि मौसम के चलते कई जगहों पर चांद दिखाई भी नहीं दिया। मीठी ईद यानी ईद उल फितर के 70 दिन के बाद बकरीद का त्यौहार मुस्लिम धर्म के लोग मनाते है...

देशभर में ईद-उल-अजहा यानी बकरीद का त्यौहार 21 जुलाई को मनाया जाएगा। दिल्ली जामा मस्जिद के नायब शाही इमाम सैयद शाबान बुखारी ने ईद-उल-अजहा (बकरीद) 21 जुलाई को मनाने की घोषणा की। दरअसल 12 जुलाई से इस्लामिक कैलंडर का अंतिम माह शुरू होने जा रहा है। यह माह जुल हिज्जा के नाम से जाना जाता है और इस्लाम में इसकी बहुत मान्यताएं है। जामा मस्जिद के नायब शाही सयैद शाबान बुखारी ने कहा कि, ईद-उल-अजहा का त्योहार 21 जुलाई को मनाया जाएगा। वहीं रविवार को इस्लामी माह जिलहिज्जा का चांद कई जगहों पर देखा गया, हालांकि मौसम के चलते कई जगहों पर चांद दिखाई भी नहीं दिया।

मीठी ईद यानी ईद उल फितर के 70 दिन के बाद बकरीद का त्यौहार मुस्लिम धर्म के लोग मनाते है। ईद उल जुहा भारत और दुनिया भर में पारंपरिक उत्साह के साथ मनाया जाता है। ईद उल जुहा के दौरान मुसलमान ईदगाह या मस्जिद में जमा होते हैं और जमात के साथ 2 रकात नमाज अदा करते हैं। यह नमाज अमूमन सुबह के समय आयोजित की जाती है।

2021 में भारत में बकरीद 21 जुलाई को मनाया जाएगा। ईद उल अजहा इस्लामी कैलेंडर का 12वां और आखिरी महीना होता है। रविवार को दिल्ली जामा मस्जिद के नायब शाही इमाम सैयद शाबान बुखारी ने इसका ऐलान किया गया।

बकरा ईद के पर सबसे पहले मस्जिदों में नमाज अदा की जाती है। इसके बाद बकरे या दुंबे-भेड़ की कुर्बानी दी जाती है। कुर्बानी के गोश्त को तीन हिस्सों में बांटा जाता है। इसमें से एक हिस्सा गरीबों को जबकि दूसरा हिस्सा दोस्तों और सगे संबंधियों को दिया जाता है। वहीं, तीसरे हिस्सा अपने परिवार के लिए रखा जाता है।

मीठी ईद की तरह बकरीद भी खुशी के साथ मनाई जाती है बस ईद-उल-फितर और बकरीद में में फर्क इतना है कि ईद-उल-फितर खुशी के तौर पर देखा जाता है रमजान के तोहफे के तौर पर मनाई जाती है और eid-ul-adha यानी की बकरीद गरीब और मुस्लिमों के लिए उनके साथ मिलकर मनाई जाती है। कुर्बानी का जो कांसेप्ट है उसका भी यही मतलब है कि वह गोश्त गरीबों में तक्सीम करें ताकि गरीबों को एक वक्त का खाना मिल सके। नमाज अदा करने के बाद वे भेड़ या बकरी की कुर्बानी (बलि) देते हैं और परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों और गरीबों के उसे साझा करते हैं।

लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के घर जाकर उन्हें ईद के मौके पर अपने घर आने का न्यौता देते हैं। महिलाएं इस दिन नए कपड़े पहनती हैं और स्वादिष्ट पकवान बनाती हैं। इस त्योहार के बारे में कहा जाता है कि इब्राहिम नाम का एक शख्स था जिसकी एक भी संतान नहीं थी। उसने बहुत मन्नतें मांगी और उसके बाद जाकर उसके घर में एक लड़के का जन्म हुआ। उन्होंने अपने बेटे का नाम इस्माइल रखा। एक दिन इब्राहिम ने अपने सपने में अल्लाह को देखा जिन्होंने उनसे कहा कि तुम्हें दुनिया में जो भी चीज सबसे ज्यादा प्यारी है उसकी कुर्बानी दे दो। अल्लाह के हुक्म पर इब्राहिम सोच में पड़ गया। उसके लिए उसका बेटा इस्माइल ही सबसे ज्यादा अजीज था। उसने धर्म की खातिर अपने बेटे की भी कुर्बानी देने में विलंब नहीं किया। इब्राहिम ने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली और अपने बेटे की बलि के लिए जैसे ही छुरी चलाई वैसे ही एक फरिश्ते ने आकर उसके बेटे की जगह एक मेमना रख दिया और इस तरह मेमने की कुर्बानी दी गई।

• तनाव कम...

नमाज पढ़ने से फायदे...

रमजान के पाक महीने में लोग नमाज अदा करते है। बहुत कम लोग जानते हैं कि नमाज अदा करना सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। नमाज अदा करना सेहत के साथ साथ स्किन के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। नमाज पढ़ने से तनाव कम होता है। नमाज अदा करने से दिमाग शांत रहता है। 5 वक्त की नमाज अदा करने से डिप्रेशन कम होता है। तनाव की वजह से चेहरे पर डलनेस देखने को मिलती हैं। अधिक तनाव लेने की वजह से चेहरे का ग्लो कम हो जाता है। ग्लोइंग और बेदाग स्किन के लिए तनाव कम करना बहुत जरुरी होता है। कोरोना काल में लोग मानसिक रूप से बहुत परेशान है। जब मन के अंदर उथल-पुथल रहती है तो इसका असर सेहत के साथ-साथ स्किन पर भी पड़ता है। इस कोरोना काल में स्वस्थ रहने के लिए ना केवल हेल्दी डाइट बल्कि मानसिक तनाव भी कम हो चाहिए। नमाज अदा करने से मन शांत हो जाता है। मानसिक शांति के लिए 5 बार नमाज अदा करना चाहिए। नमाज अदा करने से ब्लड सर्कुलेशन बेहतर बना रहता है। जिससे चेहरे को ऑक्सीजन मिलती है साथ ही चेहरे के दाग धब्बे और रेडनेस कम होती है। ब्लड सर्कुलेशन बेहतर रहने से स्किन ग्लोइंग बन जाती है। नमाज के दौरान बैठने की स्थिति से शरीर का पाचन तंत्र मजबूत बना रहता है। नमाज अदा करने से नसों और जोड़ो की दर्द की समस्या से राहत मिलती है।

• तिलक...

तिलक कई प्रकार के होते हैं। जैसे लंबा तिलक, गोल तिलक, आड़ी तीन रेखाओं वाला तिलक आदि। भगवान शिव के साधक त्रिपुण्ड तिलक लगाते हैं। वहीं शक्ति की साधना करने वाले गोल बिंदी की तरह का तिलक लगाते हैं। कहते हैं कि बगैर माथे पर तिलक लगाए कोई भी पूजा अधूरी मानी जाती है। यतिलक मूलतः तीन प्रकार का होता है। एक रेखाकृति तिलक, द्विरेखा कृति तिलक और त्रिरेखाकृति तिलक। इन तीनों प्रकार के तिलक के लिए चंदन, केशर, गोरोचन और कस्तूरी का प्रयोग किया जाता है। जिनमें कस्तूरी का तिलक सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है।